तो बोलो हर हर (To Bolo Har Har)-Shivaay Title Song

तो बोलो हर हर (To Bolo Har Har)-Shivaay Title Song
आग बहे तेरी रग में
तुझ सा कहाँ कोई जग में
है वक्त का तू ही तो पहला पहर
तू आँख जो खोले तो ढाए कहर
तो बोलो, "हर हर हर"
तो बोलो, "हर हर हर"
तो बोलो, "हर हर हर"
ना आदि, ना अंत है उसका
वो सबका, ना इनका-उनका
वही है माला, वही है मनका
मस्त मलंग वो अपनी धुन का
जंतर मंतर तंतर ज्ञानी
है सवग्य स्वाभिमानी
मृतयुंजय है महाववनाशी
ओमकार है इसी की वाणी
(इसी की, इसी की, इसी की वाणी)
(इसी की, इसी की, इसी की वाणी)
ि◌ा◌ंग धतूरा, बेल का पत्ता
तीनों लोक इसी की सत्ता
ववष पीकर ि◌ी अडिग, अमर है
महाि◌े◌व हर-हर है जपता
वही शून्य है, वही इकाय
वही शून्य है, वही इकाय
वही शून्य है, वही इकाय
जजसकेि◌ि◌ीतर बसा भशवाय
तो बोलो, "हर हर हर"
तो बोलो, "हर हर हर"
अघोरा नाम परो मत्र
ना इजस्ततत्वं गुरोः परा (महाि◌े◌व)
नागेत्रहाराय त्ररलोचनाय
ि◌स्माङ्गरागाय महेश्वराय

ननतयाय-शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै कराय नमोः भशवाय
भशव रक्षमाम्
भशव पादहमाम्
भशव रादहमाम्

भशव रक्षमाम्
भशव पादहमाम्
भशव पादहमाम्
महाि◌ेव जी तवं पादहमाम्
शरणागतम् तवं पादहमाम्
आव रक्षमाम् भशव
पादहमाम् भशव
आँख मूँि◌ कर ि◌ेख रहा है
साथ समय केखेल रहा है
महाि◌ेव, महा-एकाकी
जजसकेभलए जगत है झाँकी
जटा में गंगा, चाँि◌ मुकुट है
सौम्य किी, किी बडा ववकट है
आँख से जन्मा है कैलाशी
शजक्त जजसकी ि◌रस की प्यासी
है प्यासी, हाँ प्यासी
राम ि◌ी उसका, रावण उसका
जीवन उसका, मरण ि◌ी उसका
तांि◌व है और ध्यान ि◌ी वो है
अज्ञानी का ज्ञान ि◌ी वो है
आँख तीसरी जब ये खोले
दहले धरा और स्वगव ि◌ी ि◌ोले
गूंज उठे हर दिशा क्षक्षनतज में
नाि◌ उसी का बम-बम ि◌ोले
वही शून्य है, वही इकाय
वही शून्य है, वही इकाय

वही शून्य है, वही इकाय
जजसकेि◌ीतर बसा भशवाय
तू ही भशवा, तुझमें ही भशवा
कोई नही यहाँ तेरे भसवा
उडा राख, अजग्न को ज्वाला तू कर
भमटा ि◌े अंधेरे तू बन केसहर
तो बोलो, "हर हर हर"
जा, जा कैलाश, जा कर ववनाश
जा, जा कैलाश, जा कर ववनाश
जा, जा कैलाश, जा कर ववनाश
जा, जा कैलाश, कर सवनाश (तो बोलो, "हर हर हर")
जा, जा कैलाश, जा कर ववनाश
जा, जा कैलाश, जा कर ववनाश
जा, जा कैलाश, जा कर ववनाश
जा, जा कैलाश, कर सवनाश (तो बोलो, "हर हर हर")
आँख मूँि◌ कर ि◌ेख रहा है

साथ समय केखेल रहा है
महाि ेव, महा-एकाकी
जजसकेभलए जगत है झाँकी (तो बोलो, "हर हर हर")
जटा में गंगा, चाँि मुकुट है
सौम्य किी, किी बडा ववकट है
आाँख से जन्मा है कैलाशी
शजक्त जजसकी िरस की प्यासी (तो बोलो, "हर हर हर")
यच्छास्वरूपा जटाधराय
वपनाकहस्ताय सनातनाय
दिव्या ि ेवाय दिगम्बराय
तश्मे कराय नमोः भशवाय